वा० ६

करंगभू पान मैन खिलजोजानुथे गूल
हापरीके छान लाकेउ पायहू द खवा
लैरगे कुकोल्पाबे थीडाएके मगावे मा
लनाजथे गिनीखाबेरी हिंडपावे लि
लवालकके लील घुनावे जलकेकड
धरंग्रकोवे घूध न्वतरबे हिमाछ्वा
लपूथोगिनीजापेडुला।। चौ०।।क
लाहिकोरील्यावोदहिमानताहिमैपा
वोलीशघुवायमडेरघे रोग्पाकरापू
रीकामपमनकरे पंचमातपलीलेगी
नकेलीजोकडुकेनेलक्षपडेपरकीजो
उनवालककोघूणीदीजे जापरजावे
लाविकरिजै उनपंलर कागज [illegible]
पसनर लिखकागजवालकेगजेघ
रे धूपदेय कीवंधाये वालकघ्या
दरपुराय मपछपा केलदाग चौ
हुंहमवालकगरकेलालेव मामाछ
जेजापाकेल ठाडैरदे लल माना

८	९	३
२	७	११
१०	४	६

॥अथ योग नीलधारा छूं॰ नैनन्हू
रह बालक नहि तो हनै के स्वधी जे
बोले सनमान पियावत हजवजालै
न रहै त ॥अथ यलग हली जे नय हो र
॥नै ओदि खोवत योगी नी जे कमदानु
स मारी करीजे पं चराक उपायक हि
॥अथ चौसठ योगनी नाम क हिजे ॥अ
थ पंत्र दे॰ जं घ लग पं ओंम रोबाल
क यंत्र के गले बंधाये सकल बाध
लाम परहरे बालक योगन लाय ॥अथ
या नारी बीसमें बंधिये मेघ सुख लो
बालक जनम हि अबलाय पावे य॥

वा०
६

करंग्रसूपान नैन खेलजोजानै थे ग्रस
हपरीकेघान लकेउपावहदे स्वा
लेरगेठकेल्पावे बीगरकेमेगावे सा
लनाज येगिनीलखेरीहेंडपावे लि
सवालकके लैल घुलावे जलकेकड
धरंग्घ्रावेवे घूध न्वतर वेहिमाख्या
लपूयेगिनीजाघेउला॥ चौ०॥ हाके
लाहेवोरीलावे दहिमानताहिमेपा
वेलीशघुवायमडरंघ दोग्याकहप
रीकामघमनकरे पंचलातपलीलेगि
नकेलीजोकदके तेलकपडे परकीजो
उनवालककोघूणीदीजे जापरजाय
सविकरिजे उनपंलर कागज [illegible]
परमर लिखेकागजवालकेप्रागेध
रे धूपदेयवीवंधाय वालकेघ्या
दरपूराय भय छापाकेलधाग चौ
ड्हमेवालकेमकेलालेव मामाघ्य
उंजापाकिन ठाडूकेरदेवेल माता

८	६	३
२	७	११
९	५	[illegible]

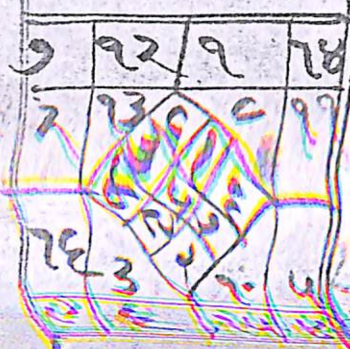
॥अथ योग नीलद्रा रो छं॥ नैन न मूंदै
रहै बालक नाहि नीहै ने कै सुधी जे
रोवे ले सतनमा ला पिया वत है जव जव मै
न रहै त ॥ अथ लग हली जै न थ है म
॥ नै कै दि खो वं त पो ती नी जै कै न दा नु
स मा री क री जै ॥ अथ रा कै उपाय कहै
॥ व चोल ठ योग नी ना मक हि जे ॥ अ
थ यंत्र दे॥ जंघ लग यंत्र जो मरो बाल
क यंत्र को रोग लेवे धाय म क लखा च
लाम पर ६ रै वालक योग न लाय ॥ अथ
या न री पो ल ने बंधि ये मो य सु खल ले
बालक सं नाही लख लो च पावे ।

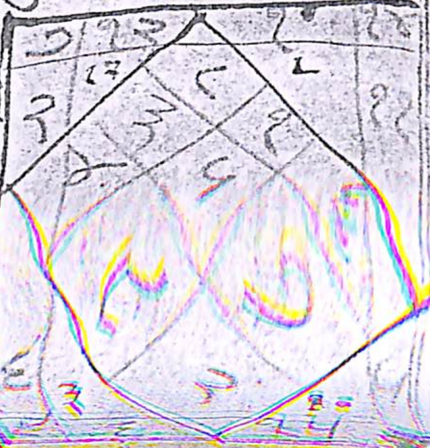
वा० ६ करग्रहणकनैन खेलजोजानि थे अबा
हप री कै छल लोकीढफायहुदं सवा
लिर गे ढु कोल्पा वै बीडग के मंगावे मा
लनज यै गिनी खा वो री हेउ पावे लि
लवा लकके लिल घुणवे जलकके
धरग्राबै वै पुध बैलर बे हिमा छो
लपूयो ति निजा पे डुला ।। चौ० ।। हके
लागि कै री लावे दहिमा ननाहि मे पा
वै सी पछु वापन डर्थ रोग्या करा पु
री का भप नन करे ये लानपली लेगी
न के लीजा कुक ने लकपडे परकी जो
ठनबालक वै धनी दीजे जापर जा थे
लाविक रि ज छनथं लर कागज [illegible]
परमरे लिवका गज बालक प्रागे भ
रे धूपदेय वीव बंधायु बालक धूपा
दु रपुराय भपछु पाईल क्ष्मा यो
जुहम बालक प्रकेला सेव मा माधे
डोजापा कीन ठड कैरदे बेल माला

८	६	३
२	७	११
१०	४	२

॥अथ योग नी लिखाण छे॥ जैनन सूद
र हुवालक नहि जीवे हुवे के लधी जी
वे ले तन माता पिता के हुवे जावे
न बुहीत ॥ यं चलग हलीजे मय हे ॥अ
स्त्रैकोदि वोबल पीति नोम के म दा तु
ल मारी करीजै पंचराके उपायक
॥अथ वोल ठयोग नी नानक हिजे ॥अ
थ पं त्र द्र॰ जं घ लग पं त्र मरौ वाल
क थं त्र क रे गा ले बांधा प सकल बाध
लाभ पर हे रे वालक योग न लाय ॥अथ
थाना रीषीस ने वांधिये सोय सुल ले
वालक ज लाहि उबल पाणा पालैय

आइ जागत वालक चेत चित्ता
हु ॥ है ॥ माता दूधी देनद वाल
क नहीं लेय ग्रका प्रापरि जो
ग्रस है तुरत उलटी करदेइ
॥ उपाय ॥ दो ॥ कद्दा पुंडा ग्यानवे
काजल सिघसो लेष गुड्डि याता
त वनायके लेचौराहे देय ॥ पुनः
यंत्र ॥ यंत्र लिखदे ग्राठका वा
लकके गलपाय सुष होवे वा
लक को घाया दूर पराय
पुनः चौतीसमे पंद्र राधके
स्मो जगंध सो लिखधरे घ
पटेय वालक गलपाय: छा
या दूर परे हो जाय ॥ तिसको
उपाय यंत्र





म भुगल गोरोचन माय लिखिये अबो
घे गल माहि जाय देव कैर आवे नाहि
फल॰ मेढ तले की मेदिल्यावे तिसन
टीका पूतली बनावे सब कहे देतिसमे
लोथ ॰ प्राजेघु गल हो रखना ये बारह
घ कपडा जो लीजै ताके चार रंग क
दीजे काला पीला स्याम सुपे द चार
उडी का राखे मे द दो॰ दलजबी लि
लिखिये जायफल लौंग मिलाय मह
दी वंदन गधा नके और गंधी र मंगा
य चौ॰ बालक उडी इन की करै घरै घ
र खोरक जो करै कोन हंडीर कंगा
य सकल सम ग्रीन मे पाव दो॰ बाल
क श्री लखु वाय के जल का टेर खिवाय
[illegible]
[illegible]

आई जागत वालक चेत चिता
ई ॥ टो ॥ माता दूधी देनट वाल
क मनहीं लेय गरकापूापरि जो:
गरस है तुरत उलटी करदेइ
॥ उपाय ॰ टो ॰ कच्चा कुंडा आनवे
का जल सिषसो लेष गुड़िया मा
त वनायके लेचौरा है दे पा ॥ पुन:
यंत्र ॥ यंत्र लिख दे आठ का वा
लक के गलपाय सुषहोवे वा
लक को घाया दूरपरा पर [illegible]
पुन: चौतीसमे पंदरा अक
रभोज गंधसो लिखधरे धू
प देय वालक गलपाय: का
या दूर परे हो जाय ॥ तिसको
उपाय यंत्र

७	२२	१	१४
२	१३	८	१७
१६	३	१०	५
२०	६	२५	४

७	१२	[illegible]	१८
३	१७	[illegible]	११
१६	३	[illegible]	[illegible]
[illegible]	६	२४	[illegible]

लेखउगल गोरोचन मधु मिलाय बंद
घे गल माहि जाय देव केर ग्रावे माहि
भूत॰ मेउ तेल ले कीसे दिल्यो वे तिसमा
टीका पूतला बनावे सब सङ्ड दे तिसमे
लोय ॰ आगेहु गल हो रवना ये बारहु
ये कपडा जो लीजै ताके चार रंग अ
दीजै लाल पीला स्याम सफेद द बार
पूडी का राखो मे द दे॰ दाखजवी बि
लिजिये जायफल लौंग मिलाय महि
दीवे दे नेग्ध्यानके ओ इन्द्रं बीर मंगा
ये बो॰ भात पुडी इन को कटे घरे थ
इ खो राक जो करे कोन हांडी हके नगा
य सकल सम ग्रीना मे बाथ दे॰ बाल
कशी लछु वाय के जल का टे रखवाय
करन व॰ अपना कीजिये॰ आगे राखन
कुंथ ॰ धूप श्या बाराप री के लदा या
द॰ जाके रइछ॰ शकाय को कपन

अपना धी उसे देखालीको मरद जनल दा
नजरगा जावो इछिन मागलसण
हो नारी ओ उसे दसे मुरदा दे वेन
नवालक छाया जानिये लन लक्षण
कवैन हथ पान लके रहे भव बोज
हे जावो छाया इसमलाग के होरे
रोगकु छला है तापन हि यो रुज वरन
हि दिन लकूनदे हमलाण इस जो
जा गीय लाकेलेखे गया हलो
उपाय रविगुरु रदूधमगावे चौ
दगो लिना हिवुनावे रविर विगो
लीबनावे गोलीपर मंत्र पडावे एक
वालककुं एक गोलीखाय लानदिवसलग
वताय दियो इस मलाण भूलपर हरे लक
मलाण देहिले टरे तिलका उपाय मंत्र
ॐ नमो देवी कलाचले पूर्वपश्चम को
चले पश्चमवा सगचले पुंजनी पल

उपाय चार हाथ कपडा जोली जेसो बो
चार रंगकरीजे कालापीलाल्यामस
पेद सातपुडी कार लोभेद सातसर
साहिवावजवीज्री जापक ललौगमील
घरीजे महदीकेगार ओरक्षंबीर
सातपुडी राखोपूर सातनाजबाधू
ललाकरो सकलसमगी हंडीघ
रोलेबालकके सिरा छुवाय ठक
लादे छवलोनकराव स्याहम [illegible]
दारकापडे लेहंडी धरा है गाडे दे
फेरालोनकराय के चार मे सब ठलाय
वे घर्च्यंल रखे कहि दे हमसाणकि
लाय सात ग्राहके ग्रं लरतियके बा
७ लेहिय बहुले रुगी अंन पबमले
रं जनापाजै लोप लोपनरं जवहै

वा०
४

डाकसाग दूजो भुग मे लनमा हु अन्मके
हिवांलके मेर जाय मेरवर रं जोको ले ड
जाय पर्न्वंतरे कहे लिखि हु जाय इति
ग्रघ गर्भ ग्रवे लिख कोइ पा यावे ओं ग्र
ष मे कहु वनो ए घर यो सु ठ वाले हु
गताय नाम पुगती करे वंलक वधायक
रे कडा हि गर मर्थ भायु लिखक में ज
लिखते हु   ग्रघ यंत्र

१	९	१	९	१	९	१	९	कुं
२	१०	२	१०	२	१०	२	१०	यं त्र
३	११	३	११	३	११	३	११	ना द
४	१२	४	१२	४	१२	४	१२	ना ग
५	१३	५	१३	५	१३	५	१३	रक्ष
६	१४	६	१४	६	१४	६	१४	रक्ष
७	१५	७	१५	७	१५	७	१५	जो कु
८	१६	८	१६	८	१६	८	१६	खेत

श्रा० ५

हनुमंत वीर देखो लोल गाती जरा वेध
सवालाखपर्यंत जिलनी धावइ यांप्र
छोलर सो दो बपवाइ गजो कुप्टदे म
होय सो पारपवाहूवा सो वेग मै मे ग
विधिकद्रली वृडे मेंऽकडपारपाई
फुरो मं त्रो ईश्वरो वाचा ॐ दे० फ्रे
लिखे जोव नरा ग्र छगं धसं बोग त्रिप
वालकै गलवांधि सलोया मिटरोग

१८	२१	२४	११	ग्रंथ मत्रीयगत
२३	१२	७	२१	गलधरण प्रथम
१३	२६	१६	१०	ओज्वर धी ग्रंगा
२०	१५	१४	२५	होय ग्रवेजोव

भुतलोय नलग्र चल छत्व ग्रवेजो
ग नाके मुत्रियाविलाग नेचजोज
केदूखिनरहे रोग ग्रपारद्य त्वलन
कहै तिलकाउ पाय वो० ग्रंथ छगंध जो
लेनगर्भ कुरकेदर को गोला समपा
य तिलसाप फेरदै ज लिखाय ना

थे॰ तेम चिजा विचथ रले॥
लडु रोटि सत खिल खवेपा
सेधरे वालक केछु वाय के।
एवमेव लिदेनि इति नंद निड
तनो ५ ॥ प्रथ षष्ठ वर्षे वलि॰
कौमुटि पूतना॰ रोग॰ ॥ प्रतिज्वर॰
॥ आकाश को देखे॰ वार २ रोवे॰ ने
त्र मिचे॰ भोजन पावे नहि सरीर
की खवर नहि रहे॰ सत भात॰ ले
विया॰ घिचडि दुध मिलाय॰ पुरि
या ७ ले हांडि विचे पाय॰ उपर फू
५ लपसि॰ दिपक चार ४ द लिरा
मे दे दिन ७ इति षष्ठ वर्षे॥ ॥ प्रथ
सप्तम वर्षे वलि॰ रोग घांसि
स रोवे दूध उलटे ॥ पन खवे
वली तंडूल पीले ह रंगि का ॥ प्र
॰ कने रके फुल॰ ७ प्रातकाल दे
च गव सतो ने इति सप्तव

३४

कुंभकर्णिका पुतना रोग होवे
ज्वर पेट फूफारा खांसि स्वास
चावल वनावेल खिचडि को
रि सन कमर खे घृत का दीवा
इति ॥ अथ दसम मास नाम
ति नाम रोग ॥ नेत्रा तो टि खेन
हि माता का दूध पिवेन हि उप
रन स्वास आवे वलि लाल तं
दुल माछि मास दीवे १ चूनवे
वालने कुजि ३ दुध पाय
पूर्व मे वलि दे नि ॥ इति ॥ अथ ए
कादश मास ॥ राक्षी नाम रोग ॥
स्वास कंवड रोग सरीर छिन र
मे घट कवि स्वास रुके वलि
प्रातकाल मे दे मद्य मास चाव
ल खिचध रगा दीप के तेल का
...से दिन ३ इति ॥ अथ द्वा...

रको·रोवे·खापानहिन्नाय·न
प·स्वास·षांसि·नेत्रमिचे·वलि
उउटे·मन·लोविपा·लागसोपव
चंदन·धूप·तिलावातेलका
वा·मिटिकेपात्रमेधरकेदद्दि
मेवलिदेय·इति·०।पूप्यग्रक्ष
स·।।करजानामपुतना·रोग·
डे·।रोवे·खजावे·सर्षपजोसि
नसिपा·स्वास·वहुतकंप·स्व
जात·मुखमुके·वेम्रधहोवे·
लौ·ततनाजेकोपीसलेनाहुल
नेलमलाकेथरनावालकके
लेना फेरउवारखेमेल का पू
नलावनामना संघ्रैरगडावे
लोगप्रगाडिरखण·जरद
मे·वालकेकेसिरधवार९·
वरावरवृखले·कवर

अथ अष्टमवर्षे · नंद निकृत ना
रोग · सियल देह · प॰ इ प्रकार · फू
ल वलि खिचड़ि साग लोविया
मछि खिला दीपक ४ हांड़ि विचध
रे द दिनमे रात्रि उ दवे इति ॥ ८ ॥
अथ नवमवर्षे · हंस निकृत ना
सरीर झके · खांसि · निद्रा वो हत ·
अतिसार वलि त इ लाल · पु
ष्प पीले · मूर रागि अंडो · लइ पलें
ग लायचि · प्र इ पउ पर दें धूपा
य दिपक धूप प र वे टिक मे दव
इति नव ॥ अथ दसम वर्षे · रोट
निकृतना · रोग नील वर्णदेह को ऊंच
की ज्वर झके · वलि चावल · लोविया
खिचड़ि ॥ खिला · द दिन मे दवे दी
पक तमे देने इति ॥ अथ एकादश
मे वालनी भस्म पूतना · रोग · न्ह
[illegible] वलि कोरा पात्रमे
[illegible] पचिपाय · [illegible]

सवलि॰ मन्दरगी नाम प्रुतना
स्कंत सारासरीर॰ जंवाई॰
प्यास॰ वलि॰ ध्वजा ७ तंडल॰
पुष्प॰ दीप॰ दक्षिणा दिशा मे॰
वलि देनि॰ इति॰ अथ पंचम॰
मास॰ कुरकुटि नाम मा रोग॰
सजा हाथ कंवे॰ दूध ना पिया
जाय॰ वेम्धध॰ वारवार रोवे॰
वलि॰ उडद काले॰ लपसि॰
अर्द्धरात्र मे वलि दे नि॰ इति॰
अथ षष्ठ मासे वलि॰ वहु
तप्यास॰ रोवे॰ मल॰ वली
चावल॰ यव॰ मरगा १ कुलथि॰
मद्य॰ मिटि के पात्र मे धरके
चराग तिला के तेल का मध्या
ह्न मे वलि दे नि॰ इति षष्ठ॰
[illegible] सप्तम मासे वलि॰ ।
[illegible]ता॰ रोग॰ ना[illegible]

(२३/० (२१)

कंपे· चुंधे नहि· रुदनकरे· वे
सुध· स्नान कि ग्रोखधि· खवरह
टि· गुगल· पीलिसरसो· येहद्र
तमेपकाके उसधूनकीमाल
तकरनि उपर से पंचगव्यसे
स्नान करना रुकौ वस्त्र लोसरी
रपोचना फेर नैवेधकी वलि
देनि धूंप· दीप· विवधरावे
इति बष्टरात्रि ग्रथ सप्तरा
त्रि· उसके त्रिभुतना· प्रानग्रसे·
रोग॥ जंबाई· अतिसार· व
मन· वालि धूप· दीप· नैवेद्य·
दा दीगा दिशा वालि दैजाय· ग्यो
प्रन खधूप इति सप्तरात्रवलि
ग्रथ अष्टरात्रि· टंउ निनानपु
तना· रोग· स्वासन श्रावेह वे
रातदिन रोवे· कंवे· ज्वर·
त्रिहुलोल· ग्याधून खधूप दे
नि· वलिग्रष्टरात्रि

वरात्रिपूर्वजन्मे रखिपुत नारोगवे
० रोवे० खांस० माक्षियाको वहे० मि
ट्टिके पात्र मे दुग्ध गुड मलायके
दक्षिण दिकतें रखन मध्याह्न
मे पोरदान प्रथाष्ट उक्करावग
इति नवरात्रि: प्रथ दशरात्रि०
रोदनि नाम पुतना ज्वर० मवाहुल
वेवोहन० रोवे० वालि० चावरवनाके
पुष्प० धूप० दीप० दक्षिणदिकमे
देना० इति दशरात्रि प्रथ एकादश
दूयमेवे प्रथद्वादश मासवलि
॥मास जात वालक तव होव स
कुना नाम पुतना जोय० ग्र... ०
जात वालक तव हि मत्र षष्ठी स
ताग तजव हि रोग रात दिन रोवे
लालमत० नेत्र मिचे० ताप० वे
हि लहाके चुंघे० चुंघा नाजावे०
तन किंछ धना र हे वलि०
... मद्य० सन पताका

मध्याहूमेवलिदैवे इतिप्र
थममास॰ अथद्वितियमास
श्वेतगात होवे॰ दूधपिया ना॰
जाय॰ सरीरसकलाजाय॰ रो
ककंठकफवाय वालि॰ चावल॰
दुग्ध॰ मध्यमेगुड।। चमरवा॰
चराग॰ निंवपत्रकोधप॰ दक्षि
णदिकमेवलिदेनि॰ सप्तरात्रिः
इतिद्वितियमास॰ अथतृतीय
मास॰ ज्वरजाटे॰ नेत्रमीचे॰ सोवे
॰रोवे॰ सरीरकोतोड।। सननाे
लेवे॰। कठाहोवे धूपघ्रिव॰
निर्माल्य॰ सरसो॰ माजीरवा
म॰ घृत॰ वालि॰ ध्वजा ७ पुष्प
लालकनेरके॰ सहित॰ हल
दि॰ घृत॰ मिष्ठान्न॰ वलिदि
पेर्द हिसणमे संध्यासमे
न ३ इति।। अथ

समकोई दोतीन मशागजोहै
१६ र होइ सजोगनिवमाह पीनी
चाहै र हउफुटीयामरगियाहि
पावतीय॰ ताकेप्रवलदूराछनो
नोनोरंकसुभाय॥मरगीसेउत
पतहै कच्चामसाणसुभायलह
कृ॥कानन रमेहोरकत्तमली
सीत हापहैरपार वालकको
पहरोगहैतामशाणपरमी
व मरगीयालदरण॥दोहा॰॥
हाथपावफुटनरहै कारसरह
ताही होत श्रांखमीचवोलेन
है मरगीयाकहिये सोय उपाय
॥चौपाई॥चोथ्येदिननासतमहै
नतापानीकछमलेहै॥नीतापा
नीकछमलेहै जवायशादेहि॰
ताकीकहीनानसुनेहि दोहा॰
श्राधीतिरचरलायवे नासवा
लककोवेध विनाजानेदेनहि

बा॰ ८ ॥ अथ उत्तम ठीकरी पा ॥ अतिम·
श्रारा लदारा॥ ताको वालक
लुरत मरेहे· जिह्वा लाल फरगग
नीटेह उद्द स्वाल होरत गंभ्रह
र जानो लगरोज निरधार पु
नः छूटइ परे हदौरे गात कुष्ट
लम जाराहि लालि सगरे अंग
पे पर मावे ही ग्रतिसार तनया
य चित विध्याडुवे ताको जारा·
धन्वंतर पुकाहि मंत्र जाय ताग
ग रु नाय हटावा वालको धोर
मत आवै॥ दोहरा॥ पीपलकी
सेवा करो होर पित राको मानो
घाउ याभ रकोट जिय हे तरो
ग की हान मं त्रं जप के जपक
री वीस हजार प्रमारा पाछे·
जपे जो मंत्र को होत रोग की।
छार॥ अथ गर्भ चनतागा।

जो जागासोटेय उलवारिसो
टि जिये सेल रोग मिट जाउनः
लद्देश्या छुटपरोका कंपैसीरहे
रपांव• नेत्रहेस्वेतहि ॥श्राकास ग
परिगटसजाये॥जोजागनेतहे
॥तिसकाकरोउपाय लरतलेक
टमिटे करोविधिसंपुलेरोग
सारेकटै।उपाय॥चौपाई स
वासेरगेहुलमलेह नामवीडा
पानधरेह सातपतासेलमध
रो ॥श्रकासपरिकाम यमतक
रो हांडिविचधरोधरमोहला
तनांतकोयोगिनिजाय ॥श्रंक
सराविकोरीलेह दहिनातम
ध्यधरेह कपालछुवापमडेर
राखो सातपलीते हिनमेभखे
कोरेदिवेटीसोवालो कटको
लटीयमेडोल्हो जापुज
ञ्रावेनहि पंत्रगतोमेवाधसहो

मंत्र पढै पुजा करै होर दिखावे
दन मृत्युंजय के जप करै राज
व होवे कल्याण ॥ अथ प्रचलि
याम प्राण लछण नासाजो
मृ को रहगु दाग डाडै जाय अ
वनजो को मलजानिये तामरण
लम रोग व उपाय॰ वंबी जो माटी
आनकै वयवा वीज जो लेय॰ गुड
जोपुराणा मेलके नालवे उपर आन
ध्य पाल आकके मथकर चोप
३ उ घीव रस न काढी काडु के नाडि
ओकर के पीव चोपाई पालाकाल
लपानि ले ई वाल को सम संधमें
ले हि तवसाको जोलल्याव: रच के
अंक विनासाट वप॰ अथ अका
प्रायोग नियमसे लछण॰ चोपाई
योगिनि जब वलकरती आय ॥ सरवे
अंग वल पीवत के छुनाय सवामन
ग वली हो ईका उपाय कीजे ॥

बा॰ आंबपडे कविलालहो कविरुखे
१५ नहोजाय दरदडकेभूतिपेटने
करओषदमिटजाय उपाय॰कु
समधाय मागुसहित हौरमोच
रसपाय माई नवश्रानके मु
वंतरे रगडाय वेलगिरकोग
रके पोसतडोडे संग जटधारा
चुररग करो घोलाजेजलसंग
रोगमिटे सबबालको होतीन
होजोरवान दोरती नितपीजो
ये होत रोगको हान॰चेतमशा
रागटसलल्दरग॰ मुखहरवे बा
लकको १४ नन हिमनभाषा
हरिवस्तदे रखेवहत॰गुनिम
नदियावताय उपाय॰फूकस
पारिसिपको हौरकोडिकोच
र वालकुजायचेयबाहि दे
नहू रोगनिवार स्यामवरन
लकेघिलापरतटहोरगाते

ग्रा नवग्रहच हर्दिग्रसोय उपाय
२४ म्रत्युंजय के जप करो हो रक
रो कछु दान गऊादी जे मंत्र
सो होत रोग की हान प्रजा स
रल देश ॥ प्रातिसो वेरो वेप्र
धिक भूसुर जाहे य उपास र
तै जात गुद ते क ह्यो ना जीव
न की प्रास ॥ उपाय ॥ सात ना
ज का पूतला करै उडद कौं ना रेरी
उपलै ना जात वारि सात छ्या
य के तुरत मंत्र जो जाप रोग
घटै सभ वाल को तुरत मिटै
तन ताप प्रथमै सा सुर गृहस
ल दैश्या ॥ मैसैं सम तीन सम की
वदन होतना हा नटार हे
तरवाज वहुतन विषे पे प्र
ति रोग विसाट उपाय लेर
सौंत चंदन सहित वंशलोच

धूसका मसाणबंध खेलप क्षणा यामसा
णबंध उल्हे दे हलीयामसाणबंध ग्रंथ
लियामसाणबंध धुलियामसाण बंधुपि
लियमसाणबंध · हडकुटियामसाणबंध
मंगियामसाणबंध चिणतियामसाणबंध
बपडियामसाणबंध कोडियामसाणबंध
उडलियामसाणबंध ठिकरियामसाणबंध
हेलिदियालीकामसाणबंध गरम मासिला
मसाण बंध फलकियामसाणबंध माव
शौदरीकामसाणबंध जलपलकी पोथीली
बंध पतालकामसाणबंध पतालपुनाग
बंध लवीबंध परीबंध उडैलबंध आ
कुण आकुणबंध हडहडबंध रोमरोम
बंध कालवालीबंध ईश्वर महादेवकी दुहाई
ई सबदसाचा पिंडकाचा फुरोमंत्र ईश्वरोवाच
पहले मंत्र जप करले २२००० के दस
उदेसवे मसाण जाय अथ वारो दिशा के
मसाण लक्षण देह अमीहि मैलेने अघि
क कनि नूर्धा हे जाय कोवि उठे लन मल

नापाप॰ आडाटेकेमंत्रकोप
रटेरापिलाय अथचलकाम
लाग्यालछ्छन ॥ बौहलनजाग
लकोलगे होतठमकलवाल
खेतवरणहो टेटूकावाल वा
पकेवे अस्ननानकरायमंत्रस
हितपुजाकरे सर्वरोगमिटजाय
औषद ॥ गोरखबुंडिआनकेसात
देप्यावरोगमिटे सुखवालहो
संटरपेहिउपाय अथयोगनि
लछ्छन ॥ मंजेपरसोवैनाहिपेर
धरननाटेय रोवटेनआकाश
कोजिसटैनतापआय ॥ उपाय
सहदेविरसआनके अरधामिर
चेलेपाय लरनपिलावबालको
समसंतेमिटजाय अथवधका
नपाराललछण॰ आठपरूरतन
ननविषे कविउनरचडजाय ॥
अतीसारहोतनविषे कीजेउपाय

चावलधिधरखाय: एकचनका
ट्रिवाकरै चमुरवावाल नहालोधरै०
०दोहा०गुड़नालियर दूधीकोछु
हायकै तिनवारपीसघुवाय ए
कगोहालल्लगना नाकेनथिकना
रेजाय नालियरजिमिने गाड़िये
०उपरचीजररवाय ग्रहराजिके
बीचमै टिजेवालिटिवाय॥ग्रथ
गहलमसालीका जिसकोलडि।
लागिहोय: दोहा॥दूधगेरहो
रहरेपीलेटेप विधि:॥एकहांडि
लेयमंगाय सवासेर राघपंजाबका
लाय सातकोकरा चुराहेकिकाहे॥
सातमख किफरकेसाहि सातफूल
कंडाईकेलाबै सातकोडिया कार्गी
पावे महादिपात शीशाकापांटादीजे०
गलकीचोलि कालीकोजे०दोहा०
बालकशोशछुवायके दीजेचौ०

गज कपडा दे दान ताके
आगे कहु विधान याहके
मध्यातको कीजे संध्या समै
फेर गहरा खोजे करसमि
कपडा लेय मंगाय ताकी
गुडिया घिकोय ल लेल्या
य उनगुडिया के आगे धरै
वाय एक गुडा घुंगटवाला
करै उसिगुडे के आगे धरै
भोग सरबत कादिहलि
ल्याव भर कुजिया विचध
रावै एकतमा घुपात धरावे
चावल घिबूरा पावे गोव
र का दिवा बनावे ना हिवाल
के बिच धरावे चावल है
र तिस नार लेय छुवाय॥
एक उपला लगता ल्यावः
तिस जहां के साथ ले जाय
नदि किनारे देय धराय॥ पूय

पा०
१२

जिसस्त्रीकेबालकहोकजाय
तिसकाउपाय॥ एककुना
लि कोरल्यावे माहविच
समगिधरावे एकखटी
लिलेहमंगाय ताकोपरां
टे सेवणावाय एकगुडा
गुलाविकरी उसिपटोले
उपरधरी खटगुडियाति
सकेआगेधरै तिनकोए
ओकाजलपाय पुडियापो
ह छल्यावे उनगुडियाके
आगेधरावे तिन
गुडेकेआगे यः मसकेसे
धूर गुडेकेलावे ताहोएक
नालिपरधराव तिनोकुति
यालेतमंगाय: काष्ठिहासि
सरवतभांग धराय त
मारवुकीचिलमधराय: दूरा

श्री. रे जाय संध्यासमे कीजीये बा
७३ लक रोगन साय । प्रथ जा लि
कीमझागीत मसाण लगा है
वा होय तिसका उपाय ॥ मंत्र
लिख्यते ॥ ॐ नमो । प्रादेस गु
रा को । प्रादेसा हरिया परवत
से हनुमंता । प्राया हस्तगाजे
ता । प्राया उलट पलट ता प्रा
या परपवन पहाड उपडंता प्रा
या लोहे का कोट वज्र का किवा
ड चारो खुंट मो बंध जाय गी
स मे बैठे हनुमंत वीर पूर्व का
देव बांधु पश्चम का देव बंधु
दखण का देव बंधु उत्तर का
देव बंधु चारो दिसा का म
साण बंधु । मजाणर बंधु मे
साणर बंधु जल का मशाण बं
धु थल का मशाण बंधु एव

चावलघिधरवाय: एकचूनका
टिकाकरै चमुखावाल लहालोधरै०
०दोहा० गुड़नालियर दूधीकोछु
हायकै तिनवारशीसछुवाय ए
कगोहालललगना नाकेनटिकना
रेजाय नालियरजिमिनगाडिये
०उपरचीजरखाय पहीरात्रिके
वीचमै टिजेवालिटवाय॥ अथ
गहलमसालेका जिसकोलडि
लगिहोय: दोहा॥ दूधगरेहे
रहरेपीलेटप विधि:॥एकहांडि
लेयमंगाय सवासेर राषपंजावेको
लाय सातकोकरा चुराहेकिकाहे॥
सातभल्लकिकरकेसाहि सातफूल
कंडाईकेलावे सातकोडिया कारगी
पावे महादिपात शीशाकापांदादीजे०
गलकीचोलि कालीकोजे० दोहा०
बालकशोशछुवायके दीजेचो

गज कपडा दे दान ताके
आगे कहु विधान याहि का
मध्यान को कीजे संध्या समै
फेर गहण खोजे कसुमि
कपड़ा लेय मंगाय ताको
गुड़िया छि को पल्लेल्या
य उन गुड़िया के आगे धरै
नाय एक गुडा घुंगटवाला
करै उस गुडे के आगे धरै
भोग मरवन कांखि हुलि
ल्याव भर कुजिया बिच ध
रावै एक तमा छु पात धरावे
चावल घिव खायावे गोव
र का दिवा बनावे नारिवाल
के बिच धरावे चावल हे
र तिल नारि लेय छुवाय॥
एक उपला लगतो ल्याव:
तिल गहण के साथ ले जाय
नदि कनारे देय धराय॥ प्र

कानाला काचेपिंडका माहादे
वरखवाला उसपिंडकानरख
वाला सवदसाचा पिंडकाचा चले
मंत्र उत्वरोवाचा १ इसमंत्रसेस
वमसारोगजाय ० डोरकताय
२१नारिकूमर बांधे तो गर्भथं
भे पुनः दो० हल्दहलपातेग्रा
नके तामेजवायनपाय छूटि
जेरग इके रोग मग्राणोजाय॥
अथ कंवेडे काउपाय होयिसं
डोग्रानके तामेजवायणपाय
रगडजोविजे वालकको रोग
कंवेडजाय अथ कंवेडालेप०
गंगाजल गोदुग्धमंगावे गो
मत्र तिलदाभ मिलावे उसदे
जलमेदे स्नहाय यहिसम
ग्रिदईवताय० पुनः लसनज
वायनपीसके जलसोपाय
नहाय० होयकृपा भगवानकी

लमसपके क हे धन्वंत रख्याल सि
सकाउपाय स हदी जडमना रस यति
सबालक को देप रालायडि मंगाय केवा
लकस्थ धन देय सथबाल कंप सिलाइ
कोउपाय काकडासिं गि हलदी दूं
दू औं प्र तिलार ज वायपहिं लोलोर
ठालेठपाव लजा में द लोजीराकुडा
मिलाय मिलरैला मे पाइये जलदी
वाफ प्रतिलार वाल के हरै ७नं दे० के८
बिलव के पथा वालो दले गलाजल
सिपल ओ पिलाय मधु लंग वाल कडुं
श्री टे प्रमिल स मिदाय प्यवालक
थैकाउ पोय औं० के भारगो सैथ नले
पावले दूधी का दूध मिलाव देत वालके
कोड थजाय ९ नं औं० जड़ तेफल का
नाथ नै लाम गाठ का कोना ठालै का
मैं लोवा जाडा करै ५ श्री रोग वाल के
का हरो जिव जिलका ना वंध ना जाय ।

अरोता कौ रोग कुअथ ग्रंथ मडा लु
हाजाप के पेट मै उपजि मेन च्यू बच्यू
के पेट मै उपजिया काग्गा काछे के पे
ट मै उपजिया कालजा काल जा घ
टे लप वंधे मेरि मक्त गुरु कौ ल कु
अरो मंत्र ईश्वरो वाचा ग्रंथ वाल क
के ड घै काय ज दे ०र विवा र मजा न
र मपु [illegible] र पंतर लि खो वनाय वा
ल मी वा नां धि येड घ्यारो ग न प्राप

३३	३२१	२७
३३	६६	३७
३७	४३	८७

ग्रंथ जिलकज ला
ए नधा जि लकोज
हुमे रहता हु तिल
मी उपाव जो नपा
हतु मानह रैला लो हकीला ठ व ज्र
कौ कीला उ ड ड वे दे प ठ ला को पा
होक मार हन मान ज जा गा जाग
जाग रे श्रीस र जा ज म हादे वा कि
ग्या गा पाप ० त्र जा कीकु जी पीव

मु- ११

रोगकं वेडा जाय
पथ्या जिस स्त्रीक
वालक ना जीवे
तिसका उपाय

१	५	७
११	१५	२
२५	२०	२५
६	१२	८

एक कोरा घडा मंगावे स्नान
कर ताको भरवाव फेर एक
ब्राह्मण को वलाव ताते पिछे
हार विध करे पुनः खडि होवे
जब चाहे नारि उज्जल होय के
कर तयारि रवि सत दिन पि
पल पे जाय ताकि कृपा वह सम
जाय एक घडो टिया कुजिया मंगा
वे भर भर घडे सो पिपल सं जा
वे भर कुजिया गरे सो वार।।
कौन स्त्री वी उस मे डार पहर
वा मास कर के घर आवे कर पू
जे जो ब्राह्मण के जमावे ताको वलो
उज्जल भोजन जनावे सदाचार

के सूनगो के घां के संग वो पड़के ग
ग रमत वे पर ठाने गय ढिग रमप ग
हो जावे ताकानीर कठावे वेन खुलि
लेवो मर्दन कीजे किंचित लहु सदिक
वे लगलै ढिको मर्दन कीजे घाड़ी दू
र हो जावे धन्वंतर री लगा वे सलो
उपाय करावे उन: चौ दिन थापदू
मनासदे हिलप्रतीरले कंठ मेलो हि
मिलं: ए जवापसा करे उपाय कहि
धन्वंतर घाड़ी जावे उन: दे० वो
ठवीजे वाढ़ि वाहि मेनु वछियुना प
स्तान करावे वालको कंठपीड़ मिट
जाय उन: वै: ग्राधी मिरचलो ला
गिरी पिलवा दिउ र उपर केर दू
ह्ला ओजा हुसा दे वे न्हा ला केहि
धन्वंतर घाड़ि जाली जाने वि सो
न मावे पाल दे पन्हाल पिवजो से

५

दलदेजोलखीजायबरछेवानकेपोल
वाडयमानादुगधवहुलजोध्यावेवह
वालककोलोटहिलोवे पेटचलेमुख
सिचलजोय घंमेनाहिकैसेहिदृपा
वैद्यधन्वंतर रोसैकहे रोगपरपार
सोकोदेहमानागहैमेदूधीलरस
जोदेयपहलिछुरिलेनहिपंतर
सरसजोलेयसुखादयहसेजहहे
हरंजकछुनाहवैद्यधन्वंतरनुके
हिलोकोरोगजोयसिलकाउपायदे
औरलेतजोंग्रानकेमहादिजलमे
मेयसाठीवाअलग्रानकेउसवा
लककोदेय ग्रपवुलकरोगलद
गोछु· सावनभादोमासजोहोरना
सिकेलालकवजोहोवेसुकेरहे
कवकहिवेलालवालकचिकीस

वे बिना छींकनल धूनि देय ॥ प्रथानि ना
मिल ह्णगा जनका शिकमारि दे है ग
छीकि करि जाय विथ्यारि जवे हिय द
र लम भाय तिसै तिनमि जानि वे प
रिड तेकरी विचार ॥ अिसकाउपाव
लोठि चावल महदि मे वे नाकाले
बालक को देवे होलपी बालक को
देवे दिनवालिलगा दियो बनावे
मम हि वंडाव करे उपाय जाय सो
ग बालक व पंजाब गर्भ दूध नहि
पी ॥ जि बेल्ह शामो जनलाय घलमे
के संग रवाइये दो ॥ तिपथ्य बताय
पुन: उपाय ॥ चौ० कथे नारी कोव
कलाले मजवाय नीरपाय काड
बनवाय प्रालथाल जो पीवेना स्वा
लक लखी तिनावाट रखपव
दरजे सबै सा चौ० मोरजा

८	७	५९	६	ॐ	६१	६२	३	१०	/
१६	१५	५२	५२	ह्रीं	५३	५४	१०	९	
३३	३४	३०	२९	क्लीं	२६	२७	३९	४०	
४१	४२	२२	२१	गें	२०	१९	४७	४८	
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	श्रीं	रें	ग्लैं	न	म	
२४	२५	३८	३७	ग्रीं	३६	३५	३१	३२	
१७	१८	४६	४५	ग्लौं	४४	४३	२३	२४	
५६	५५	११	१०	न	१३	१४	५०	४९	
६४	६३	२	५	मः	४	६	५८	५७	

॥ यं घांतीलो हुगा धन्बेल इउ बांधे
ला मा जो विथोर देगु दी जडा जो होय सु
कुण जो के गुल जो णी थे बाल के घोडी
लेन कूं डली जा के पड मालूं बोलेना
हे गो बा ल कि जीलु बाल के घोडी ना
हे निखा उपाय बांधि जो मा ही ग्राने
छे व धु घा बी ज मलाय छु डजो पुरा णु
लग मे लेके माल थे उप रलाय पुन:
गा गे छे र उपाय बना उं पा लं गा कें